Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 02, (जुलाई, 2025)
पृष्ठ संख्या 54–58

आम के प्रमुख कीट, रोग एवं उनकी रोकथाम

फूलचन्द, सी. एस. चौधरी, आर. प्रसाद, आर. एस. सिंह एवं मो. नौसाद अंसारी

डॉ. राजेन्द्र प्रसार केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, भारत।

Email Id: – phoolchand@rpcau.ac.in

भारत दुनिया के सब से बड़े आम निर्यातक देशों में से एक है, लेकिन पिछले कुछ सालों में अंतर्राष्ट्रीय बाजार मं निर्यात को गहरा धक्का लगा है क्योंकि भारतीय आम में कीटनाशक की बहुत ज्यादा मात्रा का पाया जाना। कीटनाशक के बहुत ज्यादा इस्तेमाल से बचने के लिए सही समय पर कीट की पहचान कर कीटनाशक का छिड़काव की जाए। । आम के प्रमुख रोगो का आर्थिक महत्व बहुत अधिक है क्योकि ये रोग फल उत्पादन को कम करके किसानों ओर बागवानों को नुकसान पहुॅचाते है। आम के प्रमुख रोगो से उत्पादन में कमी, फलों की गुणवत्ता मे गिरावट, कीमतों में वृद्धि और निर्यात में कमी आ जाती है। अतः आम कि फसल में लगने वाली बीमारियों और कीटों का सही समय पर कीट एवं रोग प्रबंधन करके आम की उत्पादकता एवं गुणवत्ता दोनों प्राप्त कर सकते है।

आम पर लगने वाले प्रमुख कीट व उन से बचाव के उपायः

(1) **आम के फल और तने में छेद करने वाला कीटः** आम के फल और तने मे छेद करने वाले कीटो मे मुख्य रूप से फलमख्खी और तना छेदक शामिल है। फलमख्खी फलो मे छेद करके उन्हे सड़ा देती है, जबकि तना छेदक कीट तने और शाखाओं में छेद करके उन्हे खोखला कर देता है। फलमख्खी आम के अन्दर अन्डे देती है जिससे लार्वा का संक्रमण होता है और फल समय से पहले गिर जाता है।

प्रबंधन :

- संक्रमित फलों और शाखाओं को काट कर जला दे।
- फल लगने के समय फेरोमेन ट्रैप्स का उपयोग करे।
- जैविक नियंत्रण एंजेट जैसे बेवेरिया बैसियाना का उपयोग करे।
- पेड़ के तने और शाखाओं में छेद होने पर उन्हे कीटनाशाक दवा जैसे क्लोरोपाइरीफास से भरे और तत्पश्चात छेद को गीली मिट्टी से बन्द करे।

(2) आम के बीज का घुनः आम के बीज का घुन आम के फलो को नुकसान पहुॅचाता है। यह कीट आम की गुठली में छेद कर के घुस जाता है और उस के अंदर अपना भोजन बनाता रहता है। कुछ दिनों बाद ये गूदे में पहुॅच जाता है और उसे नुकसान पहुंचाता है। संक्रमित फल गिर जाते है और बीज अंकुरित नही होते है।

प्रबंधनः

- घुन की आबादी को कम करने के लिए संक्रमित फलों को इकट्ठा करे और नष्ट कर दे।

- नीम आधारित कीटनाशक का छिड़काव करे।
- डेल्टामेथरिन के दो बार छिड़काव करके सफल नियंत्रण पाया जा सकता है। पहला छिड़काव जब फल दो से चार सेमी. आकार के हो और दूसरा पंन्द्रह दिनो के बाद।

(3) आम का पत्ता फुदका: यह कीटे पत्तियों, फूलों और फल का रस चूसते है, जिससे पौधें कमजोर हो जाते है और फल गिर जाते है। मुख्य नुकसान फूल आने के चरण में होता है, जिससे उपज में कमी आती है। इस कीट का प्रकोप जनवरी से फरवरी महीने से शुरू हो जाता है।

प्रबंधन:

- प्रारम्भिक संक्रमण के दौरान नीम आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करे।
- फूल आने के समय और फल लगने के समय इमिडाक्लोरोपिड, थायोमेथाक्सॉन या अन्य कीटनाशकों का छिड़काव करे।
- इस के अलावा कार्बोरिल 0.2 फीसदी या क्विनालफास 0.63 फीसदी का घोल बना कर छिड़काव करने से भी राहत मिल जाएगी।

(4) आम का मीलीबग: मीलीबग कीट छोटे और मुलायम शरीर वाले होते है, जो सफेद या हल्के पीले रंग के होते है और मोमी पदार्थ से ढके होते है, जिससे यह रूई जैसा दिखाई देते है। आम का मीलीबग कीट आम के पत्तो और टहनियों से रस चूसते है, जिससे पेड़ कमजोर हो जाते है और फलों का उत्पादन कम हो जाता है।

प्रबंधन:

- मीलीबग की गतिविधि को रोकने लिए पेड़ के तने के चारो और पच्चीस–तीस सेंमी. चौड़ी अल्का थीन की पट्टी बांधे और ग्रीस लगाये ताकि मीलीबग उपर ना चढ़ सके।
- डाइमेथोएट 30 प्रतिशत ईसी या ट्राईजोफोस 40 प्रतिशत ईसी का छिड़काव करे।
- संक्रमित शाखाओं को काट कर हटा दे।

(5) जाला कीट: आम का जाला कीट शुरूआती अवस्था में पत्तियों की उपरी सतह को खा कर जाला बनाता है, जिससे पत्तियों का विकास रूक जाता और फल लगने की प्रक्रिया भी बाधित होती है।

प्रबंधन:

- प्रभावित पत्तियों और टहनियों को हटाकर नष्ट कर देना चाहिए।
- पेड़ के आस–पास साफ–सफाई रखे और गिरे हुए पत्तियों को हटा दे।
- जुलाई में क्विनालफास 0.05 फीसदी या मोनोक्रोटोफास 0.05 फीसदी का 2–3 बार छिड़काव करे।

(6) दीमक: यह सफेद, चमकीले और मिट्टी के अंदर रहने वाला कीट है। यह जड़ को खाता है, उस के बाद सुरंग बना कर उपर की ओर बढ़ता जाता है। यह तने के उपर कीचड़ का जमाव कर अपनेआप को सुरक्षित करता है।

प्रबंधन:

- दीमक के घोसले और सूरंगो का नष्ट कर दे।
- प्रभावित तने के ऊपर क्लोरोपाइरिफास, इमिडाक्लोरोप्रिड या फिप्रोनील जैसे कीटनाशको का छिड़काव करे,अथवा 10 ग्राम प्रति लीटर ब्यूवेरियया बेसिआना का घोल बना कर छिड़काव करे।

(7) गाल मीज: आम का गाल मीज कीट का लार्वा बौर के डंठल,पत्तियों, फूलों और छोटे–छोटे फलों पर हमला करता है, जिससे

आसामान्य वृद्धि हो जाती है। इन के प्रभाव से फल और फूल नही लगते है।

प्रबंधन:

- गर्मियों में गहरी जुताई करे और संक्रमित भागों को हटाकर नष्ट कर दें।
- रासायनिक कीटनाशक दवा जैसे क्लोट्रानिलीप्रोल (0.04 मिली/लीटर पानी) या इमामेकिन्टन बेंजोऐट(0.04 मिली/लीटर पानी) या डेल्टामेथ्रिन(01 मिली/लीटर पानी) छिड़काव करे।

आम पर लगने वाले रोग व उन से बचाव के उपाय:

1. **आम का काला धब्बा:**

आम का काला धब्बा रोग का लक्षण पत्तियों, फलों और टहनियों पर काले धब्बों के रूप में दिखाई देता है। बीमारी का लक्षण कोणीय, काले और उभरे हुए धब्बों के रूप में पत्तियों पर दिखाई पड़ते है। संक्रमण के कई महीनों बाद पत्ती के घाव सूख जाते है, और हल्के भूरे या भूरे रंग के हो जाते है। पत्तियों के झरने के कारण पेड़ कमजोर हो जाते है। उच्च आर्द्रता और तापमानर में यह बीमारी तेजी से फैलाता है।

प्रबंधन:

- संक्रमित पत्तियों और शाखाओं को तुरंन्त हटा कर नष्ट कर देना चाहिए।
- कवकनाशी दवा जैसे कापॅरआक्सीक्लोराइड, मैंकोजेब या कार्बनडाजिम, का छिड़काव करे।
- जैविक नियंत्रण जैसे बेसिलस एमाइलोलिक्विफेशियन्सीएल बैक्टीरिया के छिड़काव से इसकी जनसंख्या को कम करने में मदद मिल सकती है।
- रोगप्रतिरोधी किस्मों को चयन करे।

2 एन्थ्रेक्नोज:

एन्थ्रेक्नोज एक फफूंदजन्य रोग है जो कि ज्यादा नमी वाले इलाकों में अधिक पाई जाती है। इस बीमारी का हमला पौधो की पत्तियों,शाखाओं और फूलों जैसे मुलायम भागों पर ज्यादा होता है। प्रभावित हिस्सों में गहरे भूरे रंग के धब्बे आ जाते है, जिसे पत्तियों, फूलों और फलों पर गहरे,धॅसे हुए घावों से पहचाना जा सकता है। गर्म,नम परिस्थितियों इस फफूंद के फैलने के लिए अनुकूल होती है।

प्रबंधन:

- गिरे हुए पत्तों ओर पौधें के संक्रमित भागों को हटा दे।
- पौधों के बीच पर्याप्त जगह छोड़े,जिससे हवा का संचार ठीक से हो सके।
- 0.2 फीसदी जिन घोल का छिड़काव सुरक्षा के तौर पर पहले से ही करे।
- फल की तुड़ाई के बाद 50–55 डिग्री सेल्सियस गर्म पानी से उपचार करे।

3.सफेद चूर्णी रोग:

आम की सफेद चूर्णी रोग,एक फफूॅद जनित रोग है,जो नम और ठंडे मौसम में पनपता है। आम के पत्तो,फूलों और फलों पर सफेद चूर्णी रोग सफेद पाउडर की तरह दिखती है। गंभीर संक्रमण के कारण समय से पहले फूल और फल गिर जाते है।

प्रबंधन:

- रोग के प्रसार को कम करने के लिए रोगग्रस्त पत्तियों,फूलों और फलों को हटाकर नष्ट कर दे।
- इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही आम के पेड़ों पर 5 फीसदी वाले गंधक के घोल का छिड़काव करें।
- कार्बन्डाजिम 12%+ मैंकोजिब 63% डब्ल्यू पी. 1.5 ग्राम अथवा कैराथेन 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे।

4. **जीवाणु कैंकर:** जीवाणु कैंकर रोग के लक्षण आम की पतियो, तने, शाखाओं और

कभी–कभी फलों पर गहरे,धॅसे हुए घावं जैसा दिखाई पड़ता है। समय के साथ,यह रोग पेड़ को कमजोर कर देता है, जिससे पत्ते झड़ जाते है और फल गिरने लगते है।

प्रबंधन:

- गम्भीर संक्रमण की स्थिति में स्ट्रेप्टोसाइक्लिन(300 पी.पी.एम.) और कापॅरआक्सीक्लरोराइड(0.3%) का मिश्रण के घोल का छिड़काव करे।
- बीमारी के फैलाव को रोकने के लिए संक्रमित पौधों को काट कर जला दे।
- पेड़ों की कटाई छटाई कर उचित वायु संचार सुनिश्चित करे। रोपण और कलम लगाने के लिए स्वस्थ्य सामाग्री का उपयोग करें।

5. लाल जंग(रतुआ):

आम का लाल जंग रोग,एक फफूंद जनित बीमारी है जो आम के पत्तो,टहनियों और कभी–कभी फलों पर नांरगी से लेकर लाल–भूरे रंग के मखमली धब्बों के रूप में दिखाई देती है। धब्बे शुरूआत में हरे–भूरे रंग के मखमली जैसा होते है जो बाद में लाल–भूरे रंग के हो जाते है। यह प्रकाश–संश्लेषण को कम करके पेड़ो को कमजोर कर देती है जिससे विकास अवरूद्ध हो जाता है।

प्रबंधन:

- रोगग्रस्त पत्तियों और टहनियों को काट कर नष्ट कर दे।
- बागो में अच्छी वायु परिसंचरण सुनिश्चित करे।
- प्रतिरोध क्षमता बढ़ाने के लिए पेड़ों को उचित पोषण और नमी नियंत्रण सुनिश्चित करे।
- बोर्डो मिश्रण या तॉबा आधारित कवकनाशी का छिड़काव करे।

6. आम विकृति(गुच्छा रोग):

यह रोग आम के फूलो, पत्तियों और शाखाओ की वृद्धि को बाधित करता है,जिससे असामान्य संरचनाएं बनती है जो फल उत्पादन में बॉधा डालती है। लक्षणों मे काम्पैक्ट,झाड़ीदर अंकुर शामिल है जिनमे छोटे–छोटे इंटरनोड और विकृत फूल पैनिकल्स होते है। बौर नपुंसक फूलों का एक ठोस गुच्छा बन जाता है।

प्रबंधन:

- बीमारी का नियंत्रण संक्रमित पुष्पगुच्छो और शाखाओं को तोड़ कर किया जा सकता है।
- रोग संचरण को कम करने के लिए माइट का नियंत्रण करे।
- जब भी संभव हो रोग मुक्त ग्राफ्टिंग सामग्री और प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करें
- अक्टूबर महीने में 200 प्रति 10 लक्षांश वाले नेथ्थलिन एसिटिक एसिड का छिड़काव करे।

7. आम का कालिख(सूटी मोल्ड रोग) :

सूटी मोल्ड रोग सीधे तौर पर आम के पेड़ को नुकसान नही पहुॅचाता है, लेकिन प्रकाश–संश्लेषण को बाधित करता है। कीटों द्वारा छोड़े गये शहद पर कालिखदार फफूॅद उग जाते है, जिससे पत्तियों की सतह काली हो जाती है। जो सूर्य के प्रकाश को अवरूद्ध करके प्रकाश–संश्लेषण को कम करता है।

प्रबंधन:

- रस चूसने वाले कीटों जैसे एफिड, मिलीबग्स और स्केल कीटों को नियंत्रित करने के लिए नीम आधारित कीटनाशक का छिड़काव करे।
- फफूॅद हटाने के लिए प्रभावित पत्तियों को हल्के साबुन वाले पानी से धोएं।

8. मैंगो स्कैब (आम की पपड़ी):–

आम की पपड़ी रोग एक फफूदजन्यरोग जो आम के पत्तियों,टहनियों और फलों को प्रभावित करता है। प्रभावित फलों पर कॉर्की पपड़ी बन जाती है,जिससे वे बिक्री के लायक नही रह जाते।

प्रबंधन:

- संक्रमित पौधों के हिस्सो को हटा दे और नष्ट कर दे।
- जहां उपलब्ध हो वहां प्रतिरोधी आम की किस्मों जैसे नीलम,जरदालु और बंगलोरा प्रजाति का उपयोग करे।
- वोर्डो मिश्रण,डाईफेनकोनाजोन या कार्बान्डाजिम युक्त फफूँदनाशी का छिड़काव करे।

9. ब्लैक टिप(कोएलिया रोग) :–

यह रोग ईट के भटठ्ो के आसपास के क्षेत्रों में उस से निकलने वाली गैस सल्फर डाईआक्साइड के चलते होता है। इस बीमारी में सब से पहले फल का आगे का हिस्सा काला पड़ने लगता हैं। इस के बाद ऊपरी हिस्सा पीला पड़ता है। इस के बाद गहरा भूरा और अंत में काला हो जाता है। यह रोग दशहरी आम में ज्यादा होता है।

प्रबंधन:

- ईट के भटठ्ों की चिमनी आम के पूरे मौसम के दौरान 50 फुट ऊंची रखी जाए।
- इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही बौरोक्स 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से बने घोल का छिड़काव करे।
- फलो की बढ़वार की विभिन्न अवस्थाओं के दौरान आम के पेड़ों पर 0.6 फीसदी बौरोक्स के 2 छिड़काव फूल आने से पहले करे और तीसरा फूल बनने के बाद जब मटर के दाने के बराबर हो जाए तब करनी चाहिए।

10. पत्तो का जलना: यह बीमारी पोटेशियम और मैगनिशियम की कमी और क्लोराइड की अधिकता के कारण होती है जिससे पत्तो के जलने की गम्भीर समस्या पैदा हो जाती है। पानी की कमी या मिट्टी में नमक के जमाव के कारण भी यह समस्या देखने को मिलती है। बीमारी के लक्षण मुख्य रूप से पत्तियों के किनारो से सूखना या जलना शुरू होता है।

प्रबंधन:

- बगीचे का नियमित रूप से सिंचाई करते रहे जिससे पौधों को पर्याप्त नमी मिलती रहे,खासकर शुष्क मौसम में।
- मैगनिशियम सल्फेट या अन्य मैगनिशियम युक्त उर्वरको का उपयोग करे तथा पौधों पर 5 फीसदी पोटेशियम सल्फेट का छिड़काव करनी चाहिए।
- यह छिड़काव उस समय करे,जब पौधों नर नई पत्तियां आ रही हो।
- ऐसे बागों में पोटेशियम क्लोराइड उर्वरक का इस्तेमाल न करे।
- रोगग्रस्त पत्तियों को हटाकर जला दे जिससे बीमारी ना फैले।

11. डाईबैक: आम का डाईबैक रोग ,आम की टहनी से ऊपर की ओर सूखने लगती है और धीरे–धीरे पूरा पेड़ सूख जाता है। बीमारी से प्रभावित छाल टहनियॉ और पत्तियों का रंग गाढ़ा हो जाता है। साथ ही साथ टहनियों और शाखाओं से गोंद जैसा पदार्थ निकलता है।

प्रबंधन:

- रोकथाम के लिए रोग से ग्रसित टहनियों के सूखें भाग को 15 सेंटीमीटर से काट कर जला दे।
- कटी जगह पर बोर्डो पेस्ट लगाएं और अक्टूबर माह में कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का 0.3 फीसदी घोल का छिड़काव करे।